RNI No. : DELBIL/2005/15122

D.L. No. : DL (S)-01/3362/2016-18

विद्याभारती संकुल संवाद

मासिक पत्रिका

E-mail : vbsankulsamvad@gmail.com

वर्ष-14 | अंक 5 | अप्रैल 2018 | विक्रमी सं. 2074 | मूल्य : एक रुपया

विद्या भारती की अखिल भारतीय साधारण सभा सम्पन्न

देश के सभी प्रांतों से आए शिक्षाविदों ने किया शैक्षिक मंथन

विद्या भारती का वैशिष्टय समाजव्यापी हो - मा. सुरेश जी सोनी

इस वर्ष विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की साधारण सभा की बैठक मध्यप्रदेश के जिला सतना में सरस्वती विद्यापीठ (आवासीय विद्यालय), उतैली में दिनांक 6-7-8 अप्रैल 2018 को माता मैहरदेवी की कृपा से सकुशल संपन्न हुई। सौभाग्यवश यहीं पर गोस्वामी तुलसीदास जी की पावन तप:स्थली चित्रकूट भी है। इस बैठक के उद्घाटन सत्र में विद्या भारती के मार्गदर्शक मान. ब्रह्मदेव जी शर्मा (भाई जी), मान. गोविन्द जी शर्मा (अध्यक्ष), मा. काशीपती जी (रा. संग. मंत्री), रा. महामंत्री श्री ललित बिहारी गोस्वामी एवं उपाध्यक्ष डॉ. डी. रामकृष्णराव मंचासीन रहे।

मा. काशीपति जी (रा. संग. मंत्री, विद्या भारती) ने उद्घाटन के अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि शैक्षिक जगत में अपना प्रभाव बढ़ा है। संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से कार्यक्रम करने में सहयोग की स्थिती बनी है। इनके लिए चार आयाम (विद्वत् परिषद्, शोध, पूर्व-छात्र एवं संस्कृति बोध) को सहारा मिला। सभी विषयों के परिषद् के गठन की आवश्यकता है। आर्थिक शुचिता, पारदर्शिता की आवश्यकता व वैधानिक नियमों का पालन करना आवश्यक है। महिला समन्वय में कार्यकर्ताओं की सक्रियता बढ़े एवं निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता हो, ऐसी अपेक्षा है। उन्होंने सामाजिक परिवर्तन हेतु विद्यालयों के माध्यम से जल संरक्षण, वन संरक्षण व प्रकृति प्रदत्त स्रोतों से संबंधित विषयों में नये कार्यकर्ताओं को जोड़ने के लिए निवेदन किया।

संस्थान के मा. अध्यक्ष श्री गोविन्द जी शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षा क्षेत्र से संबंधित अच्छाई एवं बुराई दोनों पर विचार करना चाहिए। क्लोन की समस्या वैश्विक है। इसकी परिधि में मानव भी आ रहा है, यह चिन्ता का विषय है। उन्होंने कहा कि विकसित देशों में मातृभाषा की समस्या नहीं है, परन्तु दक्षिण एशिया में मातृभाषा की समस्या है। मातृभाषा के संरक्षण एवं संवर्द्धन की आवश्यकता अपने देश में भी है। व्यक्तिगत सोच के कारण ही समस्याएँ उत्पन्न होती है। उक्त समस्या का निदान शिक्षा के द्वारा ही संभव है।

श्री ललित बिहारी गोस्वामी ने संस्थान के वर्ष भर की गतिविधियों का संक्षिप्त वृत्त प्रस्तुत किया तथा परिणामकारी कार्यक्रमों की विवेचना हुई।

दिल्ली में दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर विद्या भारती के नए भवन के निर्माण में सभी प्रांतीय ईकाइयाँ सहयोग करें ऐसा आह्वान महामंत्री जी द्वारा किया गया।

वर्तमान में विद्या भारती के अंतर्गत कुल औपचारिक विद्यालय - 12678, इनमें कुल भैया-बहन - 32,92,896, कुल आचार्य - 1,49,748 हैं एवं अनौपचारिक इकाइयों में एकल विद्यालय - 4,397 एवं संस्कार केन्द्र - 8,221 हैं।

विशेष एवं समस्याग्रस्त क्षेत्रों में विस्तार- संवेदनशील सीमावर्ती क्षेत्र (पंजाब) में 2016 में विद्या भारती के सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब ने व्यापक सर्वेक्षण किया, जिसके आधार पर बनी कार्ययोजना को क्रियान्वित करते हुए अब 6 जिलों में 60 संस्कार केन्द्र प्रारंभ हो चुके हैं।

बंगाल- नक्सलवादी क्षेत्र दार्जिलिंग के शारदा शिशु तीर्थ विद्यालय के प्रांगण में आयोजित भव्य सांस्कृतिक अनुष्ठान में सिलीगुड़ी महकमा परिषद् के सभापति सी.पी.एम. के श्री तारक कुमार सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। बंगाल के ही मालदा जिले के विद्यालय में प्रधान अतिथि के रूप में श्री अब्दुल मलिक ने निमंत्रण के लिए विद्यालय को धन्यवाद देते हुए कहा कि ''मैं क्रीड़ांगण की सजावट, अनुशासन व कुशलतापूर्वक संचालन से अभिभूत हूँ।''

केरल - विद्या भारती के भारतीय विद्या निकेतन केरल ने अभावग्रस्त एवं जरूरतमंद लोगों के लिए 'समर्पण' के रूप में इस वर्ष 1,04,51,630 रुपये समर्पण की राशि संग्रहीत की। इसमें 350 विद्यालयों के 50,000 विद्यार्थी, 1000 अभिभावक, 400 अचार्यों की 'समर्पण' में सहभागिता रही।

विद्या भारती फाउंडेशन, यू.एस.ए. - विद्या भारती फाउंडेशन, यू.एस.ए. की रचना विद्या भारती के अंतर्गत हुई है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में रहनेवाले अपने बंधुओं के सहयोग से यह कार्य होगा। छः अमेरिकी निवासी एवं एक विद्या भारती के उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद जी खेतान को मिलाकर एक बोर्ड बना है। श्री शिवकुमार जी (अ.भा. मंत्री) इसमें विद्या भारती की ओर से प्रतिनिधि सदस्य हैं। श्री राजेन्द्र प्रसाद खेतान जी एवं श्री शिवकुमार जी की दो अमेरिका यात्राएँ इस संदर्भ में हुई हैं। दस से अधिक स्थानों पर लगभग 400 लोगों की बैठक उत्साहप्रद रही है।

समापन समारोह के बीज वक्ता के रूप में मान. सुरेश जी सोनी (सह सरकार्यवाह, रा.स्व.संघ) ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज के परिदृष्य, आयामों, एवं गोष्ठियों पर व्यापक विचार-विमर्श हुआ है। अनेक नवाचारों में विशेष प्रगति हुई है जिसके कारण कार्यकर्ताओं का मन भी नवाचारों की ओर आकर्षित हुआ है। हेड, हैंड और हार्ट का आपसी समन्वय आवश्यक है। सनातन बातों की व्याख्या समयानुकूल होती रहती है। सतत् अभ्यास एवं कार्यों की पुनरावृत्ति आवश्यक होती है। उन्होंने कहा कि शिशुवाटिका के लिए सभी प्रांतों में सक्षम टीम बनाने की आवश्यकता है। सभी जिलों एवं तहसीलों में अनुकरणीय शिशुवाटिका स्थापित करनी चाहिए। अतः इसके लिए सभी प्रांतों में सक्षम टीम बनाने व शिशुवाटिका के संबंध में व्याख्या के लिए अच्छे साहित्य के सृजन की आवश्यकता है। शिशुवाटिका के माध्यम से भारतीय दर्शन प्रतिबिम्बित होना चाहिए। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समाज व परिवार का प्रबोधन करते हुए उनका उपयोग अपने कार्य में लेने एवं शैक्षिक साहित्यों को विस्तारित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विद्वत् परिषद्, शोध एवं शैक्षिक समूह (प्रशिक्षण समूह) के आपस में समन्वय एवं नैतिकता स्थापित करने वाली टोली होनी चाहिए। तकनीक के कारण मानवीय समस्याएं पैदा होने की संभावना रहती है, इसके लिए नैतिकता स्थापित करने वाली टोली होनी चाहिए। कक्षा दशम् से द्वादश तक के छात्रों के बीच समाज जीवन के विषयों को प्रतिपादित करने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में भारत के अन्दर दो विचारों (भारत केन्द्रित एवं भारत विरोधी) में संघर्ष चल रहा है। हिन्दूत्व के विरोध में राष्ट्रद्रोही ताकतें सक्रिय हो रही है। समाज विरोधी ताकतें सफल न हो, इसके लिए समन्वित प्रयास करना होगा। अपने कार्यक्रमों में भारतीय जीवनदर्शन एवं राष्ट्रीय मूल्यों की पर्याप्त चर्चा होनी चाहिए। हमारे जीवन में अहंकार का कोई स्थान नहीं है, अतः अस्मिता को अहंकार से नहीं जोड़ना चाहिए। आज प्राचीन और अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान का अद्‌भुत मॉडल खड़ा करने की आवश्यकता है। समापन समारोह के अवसर पर मा. सुरेश जी सोनी, डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा, मा. ब्रह्मदेव जी शर्मा एवं मा. ललित बिहारी जी गोस्वामी मंचासीन रहे। इस सभा में कुल प्रतिभागी संख्या 317 रही।

हरियाणा प्रांत के आचार्यों के लिए इंगलिश एवं कंप्यूटर विषय की कार्यशाला का आयोजन

शिक्षकों के सशक्तिकरण हेतु विद्याभारती हरियाणा प्रांत ने इंगलिश एवं कंप्यूटर के शिक्षकों के लिए एक चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। यह कार्यशाला 30 मार्च 2018 से 02 अप्रैल 2018 तक गीता निकेतन आवासीय विद्यालय, कुरुक्षेत्र में आयोजित हुई। इसमें विद्याभारती हरियाणा प्रांत के विभिन्न विद्यालयों से 115 शिक्षकों ने भाग लिया। शिक्षकों को प्रबुद्ध करने के लिए विषयों के विभिन्न ज्ञाताओं को आमंत्रित किया गया। विषय के ज्ञाताओं ने व्याकरण के सही उपयोग और शिक्षण कार्य को कैसे दिलचस्प बनाया जा सकता है, उस पर चर्चा की। पूर्ण जानकारी और रोमांचक चर्चाओं में भाग लेना व इंटरएक्टिव सत्रों ने शिक्षकों में एक नई ऊर्जा का संचार कर दिया। कार्यशाला में आए प्रतिभागियों को शिक्षण संबंधी ऑनलाईन सामग्री की विभिन्न जानकारी दी गई और उन्हें बताया गया कि वे कैसे शिक्षण को बाह्य जगत से जोड़ सकते हैं। इस कार्यशाला ने भाषा के बारे में ज्ञान वृद्धि करने की क्षमता प्रदान की। यह कार्यशाला निश्चित ही सबके लिए सीखने एवं सीखाने का अच्छा मंच साबित हुआ। श्री बालकिशन जी, श्री रवि जी, श्री राजकुमार जी, श्री अनिल कुलश्रेष्ठ जी एवं श्री नारायण जी ने अपने प्रेरणादायक शब्दों से सभी शिक्षकों का मार्गदर्शन किया।

प्रांत स्तरीय प्रधानाचार्य सम्मेलन झारखंड में सम्पन्न

स्थान:- सरस्वती विद्या मंदिर, सिनीडीह, झारखंड

बच्चों के मन से दूर करें फीयर ऑफ फेल्योर - दिलीप बेतकेकर

मूल्य आधारित शिक्षा ही देश के प्रति अनुराग पैदा करती है - दिलीप झा

झारखंड के सरस्वती विद्या मंदिर, सिनीडीह में विद्या विकास समिति का तीन दिवसीय प्रांतीय प्रधानाचार्य सम्मेलन गुरुवार दिनांक 07 से 10 फरवरी 2018 को संपन्न हुआ। सम्मेलन की शुरुआत मुख्य अतिथि व संस्थान के उपाध्यक्ष श्री दिलीप जी बेतकेकर ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम में श्री दिलीप जी बेतकेकर ने कहा कि असंख्य कार्यकर्ता एवं पूर्णकालिकों के अनवरत प्रयास का ही परिणाम है कि आज इस मुकाम पर पहुँच पाये हैं। अगर समर्पण और जिजीविषा नहीं हो तो इंफ्रास्ट्रक्चर और आधुनिक उपस्कर भी अक्षम साबित होते हैं, क्योंकि शिक्षक का विकल्प आधुनिकतम गजट भी नहीं हो सकता है। आगे उन्होंने प्रधानाचार्यों का आह्वान करते हुए कहा कि छात्र-छात्राओं में आत्मविश्वास और ऐसे संस्कार दिए जायें कि आगे चलकर वे भारतीय संस्कृति का पोषक और वाहक बन सकें। उन्होंने बाल विकास पर ब्रेन साईंस के संबंध में चार केमिकल्स - इंडोर्फिन, डोपामाइन, सेरोटोनिन तथा ऑक्सिटॉक्सिन की संरचना एवं कक्षा-कक्ष में छात्रों की ग्राह्यता शक्ति के संबंध में बताया।

मौके पर विद्या विकास समिति के सचिव श्री मुकेश नंदन जी, संगठन मंत्री श्री दिवाकर घोष एवं क्षेत्र के महाप्रबंधक श्री आशुतोष द्विवेदी उपस्थित थे। इससे पूर्व प्राचार्य मदन मोहन मिश्र ने गणमान्य अतिथियों का परिचय कराया। सम्मेलन में प्रांत के 300 प्रधानाचार्य और संगठन के कई पदाधिकारी शामिल हुए। सचिव श्री मुकेश नंदन जी ने कहा कि अगले वर्ष एक हजार अतिरिक्त एकल तथा संस्कार विद्यालय आरंभ किए जाएंगे। उन्होंने वर्ष भर की कार्ययोजना पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। बदलते परिवेष में चुनौतियों का सामना करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को माध्यम बनाकर बौद्धिक स्तर को उँचा करने की बात कही। महाप्रबंधक श्री आशुतोष द्विवेदी ने कहा कि आज शिक्षा के साथ चारित्रिक विकास की अत्यंत आवश्यकता है, जो विद्या मंदिर जैसे विद्यालयों में ही संभव है।

अखिलेष कुमार, झारखंड।

दो दिवसीय प्रांतीय कला संगम का हुआ आयोजन

सरस्वती विद्या मंदिर, भूली (झारखंड)

बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ कला में भी पारंगत हों - कार्यक्रम में बोले कुलपति

झारखंड के विद्या विकास समिति की ओर से सरस्वती विद्या मंदिर, भूली में दो दिवसीय प्रांतीय कला संगम का आयोजन दिनांक 05 से 06 फरवरी 2018 को किया गया। इस कला संगम में 19 विद्यालयों के लगभग 700 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बिनोद बिहारी महतो, कोयलांचल विश्वविद्यालय के कुलपति व बी.आई.टी. सिन्दरी के निदेशक श्री डी.के. सिंह ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में विद्या विकास समिति के प्रदेश मंत्री श्री लालधारी सिंह रहे।

अपने संबोधन में मुख्य अतिथि श्री डी.के. सिंह ने कहा कि संगीत विद्या भारती के पाँच आधारभूत विषयों में से एक है। कला के बिना जिन्दगी अधूरी होती है। बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ कला में भी पारंगत हों, क्योंकि कला ही हमें जीवन जीना सिखाती है। कला की कोई भाषा नहीं होती। कला से मानसिक ऊर्जा उत्पन्न होती है। उन्होंने कहा कि शिक्षण विज्ञान भी है और कला भी। कला अंतर-चेतना का जागना है। कला, दिल और दिमाग का समन्वय बनाए रखती है। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता में उतार-चढ़ाव लगा रहता है, ऐसे में हमें रुकना नहीं चाहिए। हमारी प्रतिस्पर्धा दूसरों से नहीं स्वयं से होती है। अगर स्वयं से जीत गए तो हमें कोई भी हरा नहीं सकता। प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को उचित मंच मिले और वे राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का विकास कर सकें, यही कला संगम का उद्येश्य है।

कार्यक्रम का संचालन श्री रमेशमणि पाठक ने किया। स्वागत भाषण विद्यालय के प्राचार्य श्री हरिनारायण शर्मा ने दिया। कार्यक्रम की भूमिका समिति के प्रदेश सचिव श्री मुकेश नंदन ने रखी एवं अध्यक्षीय आभार ज्ञापन श्री संजय कुमार ने किया।

अखिलेष कुमार, झारखंड।

पंजाब प्रांत में हुआ ''आचार्य आधार वर्ग'' का आयोजन

विद्याभारती पंजाब की प्रांतीय इकाई सर्वहितकारी शिक्षा समिति ने 15 दिवसीय ''आचार्य आधार वर्ग'' का आयोजन बाबा श्रीचन्द कौशल विकास केन्द्र, रत्तेवाल (नवांशहर) पंजाब में दिनांक 15 मार्च 2018 को किया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री विजय नड्डा जी (सह संगठन मंत्री, उत्तर क्षेत्र), श्री अशोक बब्बर जी (महामंत्री, सर्वहितकारी शिक्षा समिति) ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित करके किया।

इस वर्ग में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांतीय प्रचार प्रमुख श्री रामगोपाल जी ने (सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब द्वारा आयोजित आचार्य आधार वर्ग के उद्घाटन सत्र में) कहा कि ''समर्पित, योग्य व प्रशिक्षित आचार्य ही बालकों को विद्याभारती के लक्ष्य के अनुसार शिक्षा के साथ-साथ संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण कार्य करके योग्य युवापीढ़ी का निर्माण कर सकता है।'' इस आचार्य आधार वर्ग के साथ-साथ शिशुवाटिका की आचार्या बहनों का भी 15 दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग प्रारंभ हुआ। इन दोनों प्रशिक्षण वर्गों की संख्या क्रमशः 109 व 31 रही। इस आचार्य आधार वर्ग में हर प्रतिभागी आचार्य एक चयन प्रक्रिया से चयनित होकर इस वर्ग में सम्मिलित हुआ।

तीन दिवसीय आचार्य कार्यशाला सम्पन्न

पूज्य तपस्वी जगजीवन जी महाराज सरस्वती विद्या मंदिर, हसनपुर, राजगीर (नालंदा) बिहार के प्रांगण में तीन दिवसीय आचार्य कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला का उद्‌घाटन मुख्य अतिथि श्री रामेन्द्र राय (पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, विद्या भारती) ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया। वंदना के पश्चात् मुख्य अतिथि श्री राय ने आचार्यों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक देश के विकास, वहाँ के समाज में परिवर्तन एवं भावी पीढ़ी के निर्माण में शिक्षकों (आचार्यों) की अति महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक भावी नागरिक में नैतिकता, जीवनमूल्य केवल तीन व्यक्तियों से प्राप्त होती है, वे हैं – माता, पिता एवं शिक्षक। शिक्षक को देवत्व प्राप्त होता है। देवत्व ही उन्हें महान बनाता है। शिक्षक अपने देवत्व को जाग्रत करें तथा विद्यार्थियों के अन्दर देवत्व जागरण की प्रेरणा देने का कार्य करें, तो निश्चित रूप से भारत पुन: विश्वगुरु के स्थान पर विराजमान होगा। सृजनात्मकता, सद्‌विचार एवं साहस ज्ञान के तीन तत्त्व हैं। इन तीनों तत्त्वों का समावेष शिक्षक (आचार्यों) बन्धुओं को ध्यान में रखकर चलना होगा। श्री राय ने आगे कहा कि इसके लिए अच्छी योजनाओं की रचना आवश्यक है। शिक्षकों से गुणवत्तायुक्त शिक्षा का सुन्दर स्वरूप खड़ा करने के लिए अपनी प्रभावी व उपलब्धिपरक भूमिका निर्वहन करने की अपेक्षा है।

समापन अवसर पर डॉ. प्रेमनाथ पांडेय ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज शिक्षा का व्यवसायीकरण होने के कारण शिक्षा का उद्देश्य 'सा विद्या या विमुक्तये' के स्थान पर 'सा विद्या या नियुक्तये' हो गया है। ऐसे में शिक्षा की दिशा नकारात्मक व अभावात्मक होती जा रही है, जो वैश्विक चिन्ता का विषय है। समाज का मार्गदर्शक शिक्षक भी इसी अंधी दौड़ में भाग ले रहे हैं, यह आज वैश्विक समस्या का रूप लेता जा रहा है। शिक्षकों की भूमिका को एन.सी.टी.ई. ने माना है कि शिक्षक किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम का मूल तत्त्व है जो शैक्षिक प्रक्रिया के प्रत्येक चरण के निर्वहन में अहम भूमिका निभाता है। अत: राष्ट्र के सुरक्षित भविष्य के निर्माण हेतु आवश्यक है कि शिक्षक (आचार्य/आचार्या) बच्चों के (सभी आधारभूत एवं जीवनमूल्य के विषयों सहित) शैक्षिक निर्माण में लगे रहें, क्योंकि बच्चे ही देश के भविष्य हैं।

प्राचार्य श्री अमरेश कुमार ने समापन में कहा कि नवीन परीक्षा पद्धति सी.बी.एस.ई. तथा प्रांतीय परीक्षा व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए विषय शिक्षण व भाषा विकास के वर्त्तमान परिपेक्ष्य में विद्यालय एवं आचार्यों के विकास की योजनाएँ करना ही इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य है।

सुमनकुमार चौधरी (सूचना व जनसंपर्क विभाग)

मोरक्को में आयोजित वर्ल्ड स्कूल गेम्स के ट्रायल में ज्वालादेवी के छात्रों का हुआ चयन

प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) शिक्षा प्रसार समिति द्वारा संचालित ज्वाला देवी स.वि.म. इंटर कॉलेज सिविल लाइन्स (प्रयाग) इलाहाबाद के अनुसार मोरक्को (दक्षिण अफ्रीका) में दिनांक 02 मई से 09 मई 2018 तक आयोजित वर्ल्ड स्कूल ऐथलेटिक्स चैम्पियनशिप के ट्रायल के लिए ज्वालादेवी सरस्वती विद्या मन्दिर सिविल लाइन्स के तीन छात्रों का चयन हुआ है। एस.जी.एफ.आई. के हैमर थ्रो के स्वर्ण पदक विजेता मो. अफसार अहमद तथा भाला फेंक प्रतियोगिता के विजेता अर्पित यादव व इरफान खान का चयन लखनऊ में 26 मार्च को आयोजित ट्रायल हेतु हुआ है।

छात्रों की इस विशेष उपलब्धि पर प्रधानाचार्य श्री युगल किशोर मिश्र, प्रदेश निरीक्षक श्री बांकेबिहारी पाण्डेय, अध्यक्ष श्री शरद गुप्त, प्रबंधक श्री च्यवन भार्गव, क्षेत्रीय खेल प्रमुख श्री जगदीश सिंह, प्रधानाचार्य (शिशु मन्दिर) श्री सुमन्त पाण्डेय एवं विद्यालय के समस्त आचार्यों ने उनके परिजनों को बधाई दी।

काशी प्रान्त के संस्कार केन्द्रों के भैया-बहिनों दो दिवसीय शिविर

ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मन्दिर सिविल लाइन्स, प्रयाग के प्रधानाचार्य श्री युगल किशोर मिश्र की विज्ञप्ति के अनुसार विद्या भारती काशी प्रान्त के अन्तर्गत चलने वाले सभी सरस्वती संस्कार केन्द्रों के भैया-बहिनों का दो दिवसीय शिविर का आयोजन दिनांक 07 व 08 अप्रैल 2018 को ज्वाला देवी विद्या मंदिर में हुआ। इसके उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. राजमणि कोल (विधायक, कोरांव), की अध्यक्ष के रूप में उपस्थिति रही।

इस शिविर के आयोजन का मुख्य उद्देश्य अत्यन्त पिछड़े क्षेत्रों तथा सेवा बस्तिओं के भैया-बहिनों के अन्दर सुसुप्त मेधाशक्ति को जागृत करना तथा उनके अन्दर आत्मविश्वास तथा राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करना है। इसी क्रम में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस सराहनीय कार्य की मैं जितनी भी प्रशंसा करुँ, वह कम है जो कि स्वयं अपना धन खर्च करके भैया-बहिनों के लिए नि:शुल्क शिक्षा तथा संस्कार की कक्षाएँ अनवरत चलाते हैं। समय-समय पर उत्सव, प्रतियोगिता तथा शिविरों के माध्यम से उनके अन्दर स्वाबलंबन की भावना जागृत करते हैं।

कार्यक्रम में श्री राजेश्वर सिंह (मंत्री, बाल कल्याण समिति) सहित शहर के गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे।

Kunal Arora of Gita Niketan School Cleared KVPY Exam 2018

Kunal Arora of class XII of Gita Niketan Awasiya Vidyalaya, Kurukshetra cleared the prestigious Kishore Vigyanik Protsahan Yojna (KVPY) exam. It is a scholarship programme funded by Department of Science and Technology, Government of India with an aim to attract exceptionally talented and highly motivated students for pursing research career in Science. The selection procedure consists of a written test followed by the interview.

It is noteworthy to mention that the students who qualify KVPY exam qualify to get admission in top institutes like Indian Institute of Science (IISc) and Indian Institute of Science Education and Research (IISER).

The principal of the school Sh. Narayan Singh and the school management congratulated Kunal and his parents for his achievement and wished him good luck for all the future endeavours.

विद्या भारती मालवा के जिलाश: पूर्व-छात्र सम्मेलन

विद्याभारती मालवा प्रान्त द्वारा 1980 से 2010 तक के स्वापोषी पूर्व छात्रों के जिलाश: सम्मेलन आयोजित किए गए। जिलाश: पूर्व छात्र सम्मेलन 13 स्थानों पर आयोजित किए गए, जिनमें 3302 पूर्व-छात्र छात्राओं ने सहभागिता की।

जिलाश: सम्मेलनों में पूर्व छात्रों को विद्याभारती के प्रांतीय संगठन मंत्री श्री अखिलेश जी मिश्र एवं सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मालवा के प्रान्त प्रमुख श्री ओमप्रकाश जांगलवा का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। पूर्व छात्रों के इन सम्मेलनों में अतिथियों ने छात्रों से सदैव विद्यालयों एवं विद्या भारती से जुड़े रहने का आह्वान करते हुए कहा कि विद्यालय में प्राप्त शिक्षा एवं संस्कारों का सदैव स्मरण रखें। हमारे संस्कार ही हमें जीवन में आगे बढ़ने में सहायक होंगे।

कई पूर्व-छात्रों ने भी अपने विद्यार्थी जीवन के रोचक अनुभव सुनाए एवं अपने विद्यालय हेतु आगे भी सहयोग एवं समर्पण हेतु संकल्प लिया।

अभिभावकों के लिए.....

एक पिता अपने बेटे को डॉक्टर बनाना चाहता था। बेटा इतना मेधावी नहीं था कि पी.एम.टी. क्लियर कर लेता। इसलिए दलालों से एम.बी.बी.एस. की सीट खरीदने का जुगाड़ किया गया। जमीन, जायदाद, जेवर गिरवी रख कर 35 लाख रुपये दलालों को दिए, लेकिन वहाँ भी धोखा हो गया। पर किसी तरह विदेश में लड़के का एडमिशन कराया गया, वहाँ भी चल नहीं पाया। फेल होने लगा, डिप्रेसन में रहने लगा। रक्षाबंधन पर घर आया और यहाँ फाँसी लगा ली। 20 दिन बाद माँ, बाप और बहन ने भी कीटनाशक खाकर आत्महत्या कर ली। अपने बेटे को डॉक्टर बनाने की झूठी महत्वाकांक्षा ने पूरे

परिवार को लील लिया। माँ-बाप अपने सपने, अपनी महत्वाकांक्षा अपने बच्चों से पूरी करना चाहते हैं.....

मैंने देखा कि कुछ माँ-बाप अपने बच्चों को टॉपर बनाने के लिए इतना ज्यादा अनर्गल दबाव डालते हैं कि बच्चे का स्वाभाविक विकास ही रुक जाता है। आधुनिक स्कूली शिक्षा बच्चे की इवैलुएसन और ग्रेडिंग ऐसे करती है जैसे सेब के बाग में सेब की खेती की जाती है। पूरे देश के करोड़ों बच्चों को एक ही सिलेबस पढ़ाया जा रहा है....

उदाहरण के लिए - जंगल में सभी पशुओं को एकत्र कर सबका इम्तहान लिया जा रहा है और पेड़ पर चढ़ने की क्षमता देखकर रैंकिंग निकाली जा रही है। यह शिक्षा व्यवस्था ये भूल जाती है कि इस प्रश्न पत्र में तो बेचारा हाथी का बच्चा फेल हो जाएगा और बन्दर का फर्स्ट आ जाएगा। अब पूरे जंगल में यह बात फैल गई कि कामयाब वो जो झट से कूद के पेड़ पर चढ़ जाए। बाकी सबका जीवन व्यर्थ है। इसलिए उन सब जानवरों के, जिनके बच्चे कूद के झटपट पेड़ पर चढ़ पाए, उनके लिए कोचिंग खुल गए, वहाँ पर बच्चों को पेड़ पर चढ़ना सिखाया जाने लगा। चल पड़े हाथी, जिराफ, शेर, साँड, भैंसे और समंदर की सब मछलियाँ चल पड़ी अपने बच्चों के साथ कोचिंग इंस्टिच्यूट की ओर..... हमारा बिटवा भी पेड़ पर चढ़ेगा और हमारा नाम रोशन करेगा।

हाथी के घर लड़का हुआ... तो उसने उसे गोद में ले के कहा, हमरी जिन्दगी का एक ही मकसद है कि हमार बिटवा पेड़ पर चढ़ेगा..... और जब बिटवा पेड़ पर नहीं चढ़ पाया तो हाथी ने सपरिवार खुदकुशी कर ली।

अपने बच्चे को पहचानिए। वो क्या है, ये जानिए। हाथी है या शेर, चीता, लकड़बग्घा, जिराफ, उँट है या मछली, या फिर हंस, मोर या कोयल? क्या पता वो चींटी ही हो? और यदि चींटी है आपका बच्चा, तो हताश निराश न हों। चींटी धरती पर सबसे परिश्रमी जीव है और अपने खुद के वजन की तुलना में एक हजार गुना ज्यादा वजन उठा सकती है। इसलिए अपने बच्चों की क्षमता को परखें और जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें, हतोत्साहित नहीं.....।

विजय जी मारु।

शाकाहार

कितने पुण्य उदय होने पर, मानव जीवन मिलता है।
जानबूझ कर फिर क्यों वह, इतनी उदण्डता करता है।।
जिन जीवों की रक्षा का, है भार मनुज के कंधे पर।
उन्हें मार कर बेच रहा है, उतर घिनौने कंधे पर।।
नहीं किसी की सुनता है, और नहीं किसी की गुनता है।
ठोकर खाकर पछताता है, फिर भी नहीं सुधरता है।।
तन भी जर्जर, मन भी दूषितभाव सभी कुंठित हो जाते।
चीत्कार कर रही आत्मा, फिर भी लत से बाज न आते।।
जितने भी जननायक थे, लगभग सब शाकाहारी थे।
गाँधी, तिलक, कबीर, गोखले, अहिंसा व्रतधारी थे।।
वर्षों तक श्रीराम, लक्ष्मण, रहे जंगली डेरों में।
अमृतरस सा मिला जायका, था शबरी के बेरों में।।
माखन मिश्री खाकर भी, जो दानवदल पर भारी थे।
गीता ज्ञान सिखाने वाले, गिरधर शाकाहारी थे।।
किए अलौकिक कार्य अनेकों, पतितों के उद्धार के।
रहे समर्थक महावीर, बुध, नानक शाकाहार के।।
घास-फूस खा राणा ने, था धूल चटाया अकबर को।
पोरस ने अपना पौरुस, दिखलाया वीर सिकन्दर को।।
ईसा और मोहम्मद ने, भाईचारा सिखलाया है।
'जीव मात्र से प्रेम करो', ऐसा संदेश सुनाया है।।
फिर क्यों लेकर आड़ धर्म की, कत्लेआम कराते हो।
मार काट कर जीवों को, अपना त्योहार मनाते हो।।
बेजुवान पशु की लाचारी, पर क्यों जश्न मनाते हो।
दिव्य अंश के वंशज हो, क्यों कुल में दाग लगाते हो।।
मांस जीव का खाते हो, फिर भी इंसान कहाते हो।
मंदिर रूपी इस शरीर को, कब्रिस्ताान बनाते हो।।
मटन-चिकन खाने से पहले, हाल जीव का लख लेते।
सुई चुभो अपने तन में, एहसास दर्द का कर लेते।।
कितनी पीड़ा होती है जब, एक कांटा चुभ जाता है।
सोचो उस प्राणी की हालत, जिसका तन काटा जाता है।।
कितना दर्द, वेदना कितनी, तड़पन कितनी भारी होगी।
जीतेजी जिसके शरीर पर, चलती खड्ग दुधारी होगी।।
अंतर के पट खोल देख लो, पशु के आहत जीवन को।
ईश्वर ने यह देह बनाई, शुद्ध सात्विक भोजन को।।
मनु से लेकर मानव तक, सारा इतिहास बताता है।
मांस खिलाने खानेवाला, नर-पिशाच बन जाता है।।
न्याय दृष्टि में कुदरत की, सब प्राणी एक समान है।
सबको रहने, जीने, खाने, का अधिकार समान है।।
हम नृप दिलीप के वंशज हैं, जो गाय चराने जाते थे।
जब सिंह सामने आ जाये, तो खुद आगे बढ़ जाते थे।।
हम उस शिवि के बेटे-बेटी, जिनके सत्कृत्य बोलते थे।
रक्षा में एक कबूतर की, खुद अपना मांस तौलते थे।।
ऐ ऋषि-मुनियों की संतानों, क्या हुआ तुम्हें क्या करते हो।
ये जीव तुम्हारे सहभागी, इनका ही भक्षण करते हो।।
भानुप्रताप और कपटी मुनि, की गाथा क्या सुनी नहीं।
मांस पकाया धोखे से, फिर कितनी दुर्गति हुई।।
जीयो और जीने दो सबको, यह ही रीति हमारी है।
सभी प्रणियों में ईश्वर हैं, यह मान्यता हमारी है।।
फल, कंदमूल खाने वाले, हम ऋषियों की संतान हैं।
'आत्मवत् सर्वभूतेषु' ही अपनी पहचान है।।

शिवशरण अमल।

कटक मेडिकल कॉलेज में अध्ययनरत पूर्व-छात्रों का अभिनंदन समारोह सम्पन्न

शिक्षा विकास समिति, ओड़िशा के द्वारा श्री रामचन्द्र भंज मेडिकल कॉलेज, कटक में अध्ययनरत सरस्वती शिशु/विद्या मंदिर के पूर्व-छात्रों के लिए दिनांक 18 मार्च 2018 को एक अभिनंदन कार्यक्रम अनुष्ठित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री रामचन्द्र भंज मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. प्रकाशचन्द्र महापात्र (डायरेक्टर रिजनल स्पाइन इनजुरी) मुख्य अतिथि रहे। सम्मानित अतिथि के रूप में डॉ. शक्तिप्रसाद दास (डायरेक्टर, अस्थिशल्य विभाग) तथा डॉ. अशोक कुमार मलिक (स्नायु विभाग के मुख्य प्रोफेसर) रहे। मुख्य वक्ता के रूप में मान. गोविन्द चन्द्र महांत (सह संगठन मंत्री विद्याभारती) रहे।

मान. गोविन्द चन्द्र महांत ने अपने उद्‌बोधन में सभी डॉक्टरों (पूर्व-छात्र) से कहा कि चिकित्सालय के अलावा आप सभी एक सफल चिकित्सक के रूप में सेवा क्षेत्र में अपना योगदान करते हुए समाज एवं राष्ट्रसेवा में लगे रहें, यही हमारी आप सभी से अपेक्षा है। उन्होंने कहा कि समाज जीवन में मानवीय मूल्यबोध दूर होता जा रहा है। हमारे पूर्व-छात्र अपने व्यक्तित्त्व को उत्तम करते हुए अपने समाज व राष्ट्र को भी सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पहुँचाने का कार्य करें, ऐसा उन्होंने आह्वान किया।

संभाग संयोजक श्री मधुसूदन बारिक ने मंचासीन अतिथियों का परिचय कराया। डॉ. छात्र श्री देवव्रत विश्वाल ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम में 81 पूर्व-छात्रों ने सहभाग किया। सभी पूर्व-छात्रों को समिति की तरफ से स्मृति-चिन्ह प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम को श्री देवेन्द्र कुमार पट्टनायक (पूर्व-छात्र संयोजक) ने संचालित किया।

प्रांतीय प्रचार प्रसार संयोजक, ओडिशा।

राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तथा संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रायोजित हुई प्रतियोगिता

पं. दीनदयाल जी के जन्म-शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तथा संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय स्तर पर निबंध लेखन प्रतियोगिता का परिणाम घोषित कर दिया गया है। संस्थान के निदेशक डॉ. रामेन्द्र सिंह ने बताया कि पाँच वर्गों में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में देश भर से 2228 निबंध संस्थान को प्राप्त हुए, जिनमें शिशु वर्ग में 573, बाल वर्ग में 338, किशोर-तरुण वर्ग में 635, कॉलेज वर्ग में 52 तथा नागरिक वर्ग में 130 निबंध हैं। सभी वर्गों के विजेता प्रतिभागियों को कुल 1 लाख 38 हजार रुपये की नकद राशि के 5 वर्गों से 55 पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। शिशु वर्ग में सरस्वती शिशु मंदिर उच्च विद्यालय मुरैना की संजना तोमर को प्रथम पुरस्कार, श्री गो. सरस्वती शिशु मंदिर इंटर कॉलेज धर्मपुर, देहरादून के पीयूष विष्ट को द्वितीय, सरस्वती शिशु मंदिर उ.मा.वि. मुरैना की पूर्ति डंडौतिया को तृतीय एवं पूर्ति मांडिल को चतुर्थ एवं गीता विद्या मंदिर, हरियाणा के यश जैन को पंचम पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त 7 को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

बाल वर्ग में गीता निकेतन विद्या मंदिर, सेक्टर-3, कुरुक्षेत्र की पल्लवी को प्रथम, खुशी को द्वितीय, सरस्वती विद्या मंदिर, गोला की पलक सिंह को तृतीय, बालिका आवासीय विद्या मंदिर, लक्ष्मणगढ़, सीकर की प्रतीक्षा जोशी को चतुर्थ एवं सरस्वती शिशु मंदिर, लखीमपुर खीरी की अनुष्का को पंचम पुरस्कार प्रदान किया गया । इसके अलावा 6 अन्य को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

किशोर तरुण वर्ग में श्रीमद्‌भग्वदगीता व.मा.वि. नारायणगढ़ की प्राची को प्रथम पुरस्कार, सरस्वती विद्या मंदिर ईटर कॉ. गोला गोकर्णनाथ की साधना वर्मा को द्वितीय, श्रीमद्‌भग्वदगीता व.मा.वि. नारायणगढ़ की सिया गुप्ता को तृतीय, सरस्वती शिशु मंदिर लांजी, बालाघाट की आंचल दमाहे को चतुर्थ एवं प्रिया रहांगडाले को पंचम पुरस्कार प्रदान किया गया। इनके अलावा 6 अन्य को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

कॉलेज विद्यार्थी वर्ग में होल्कर विज्ञान महाविद्यालय भंवरकुँआ, इंदौर की वंशिका मेहता को प्रथम पुरस्कार, शारदा सर्वहितकारी मॉडल सी. सेके. स्कूल, चंडीगढ़ की तक्षिका को द्वितीय, वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय, बहादुरगढ़ की ऋतु छिल्लर को तृतीय, जाट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, कैथल हरियाणा की सीमा रानी को चतुर्थ एवं वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय, बहादुरगढ़ की गरिमा को पंचम पुरस्कार प्रदान किया गया। इनके अतिरिक्त 7 अन्यों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

नागरिक वर्ग में जोधपुर के वासुदेव प्रजापति को प्रथम पुरस्कार, कुरुक्षेत्र के अशोक राठी को द्वितीय, धनबाद के गौतमकुमार दास को तृतीय, मथुरा के डॉ. रामसेवक को चतुर्थ, शोनितपुर असम के श्री मनमणि शर्मा को पंचम पुरस्कार दिया गया। इनके अलावा सांत्वना पुरस्कार पाने वालों में सीतामढ़ी बिहार के योगेन्द्र राय, उधमपुर की रीता शर्मा, डिब्रूगढ़ की जोंटी बोरा, चंडीगढ़ की रजनीश कौर, कुरुक्षेत्र के रास बिहारी पांडेय एवं इलाहाबाद के अमन तिवारी शामिल हैं।

डॉ. रामेन्द्र सिंह।

विद्याभारती संकुल संवाद

Date of publishing : 20 April, 2018
Total No. of Pages : 8

RNI No. : DELBIL/2005/15122
D.L. No. : DL (S)-01/3362/2016-18
Date of Posting -24-25 April, 2018

विद्या भारती हरियाणा के पूर्व-छात्रों का मिलन एवं सम्मान समारोह 'सृजन' सम्पन्न

गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर स्थित विद्याभारती के सभागार में विद्या भारती हरियाणा के पूर्व छात्रों का मिलन समारोह **'सृजन'** आयोजित किया गया, जिसमें पूरे हरियाणा प्रान्त से लगभग 200 पूर्व-छात्र उपस्थित रहे। विद्या भारती के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री यतीन्द्र जी शर्मा, राष्ट्रीय मंत्री श्री हेमचन्द्र जी, संस्कृति शिक्षा उत्थान न्यास के संयोजक एवं श्रीमद्भगवद् गीता विद्यालय के पूर्व प्राचार्य श्री दीनानाथ बत्रा के द्वारा दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर श्री यतीन्द्र जी शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि विद्याभारती का लक्ष्य शिक्षा में परिवर्तन के माध्यम से ज्ञानवान, संस्कारवान एवं चरित्रवान नागरिकों का निर्माण करना है तथा भारत की वर्तमान चुनौतियों को स्वीकार करते हुए श्रेष्ठ भारत के नवनिर्माण को सुनिश्चित करना है।

पूर्व छात्रों को सम्बोधित करते हुए विद्या भारती के राष्ट्रीय मंत्री श्री हेमचन्द्र जी ने कहा कि जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए विद्यालयों से प्राप्त संस्कारों को अपनाते हुए जीवन को सार्थक बनाएँ और कुछ ऐसा कार्य करें कि विश्व में भारतमाता की जय-जयकार हो।

गीता विद्यालय के पूर्व प्राचार्य श्री दीनानाथ बत्रा ने अपने पूर्व-छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि अपने आचरण से समाज व देश का नाम रोशन करें। कार्यक्रम में अलग-अलग कार्य-क्षेत्रों के आधार पर तीन चर्चा समूह बनाए गए थे। प्रथम समूह में विद्या भारती के पूर्व-छात्र जो विभिन्न प्रशासनिक पदों पर आसीन हैं, ने विभिन्न विषयों पर अपने-अपने मत प्रस्तुत किए तथा विद्याभारती के विद्यालयों से प्राप्त शिक्षा एवं संस्कारों की सराहना करते हुए कहा कि इन विद्यालयों से प्राप्त शिक्षा के कारण ही विभिन्न प्रलोभनों से बचते हुए वे अपना कार्य ठीक प्रकार से संचालित कर रहे हैं।

द्वितीय चर्चा समूह में शिक्षाविद्, डॉक्टर, बैंक कर्मचारी आदि तथा तृतीय चर्चा समूह में वकील, सी.ए., मीडियाकर्मी, व्यापारी एवं समाजसेवी पूर्व-छात्र थे। इन दोनों समूहों में सभी पूर्व छात्रों ने समाज निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण में उचित योगदान देने का संकल्प लिया। इस समारोह में अमेरिका से आए हुए गीता स्कूल के पूर्व-छात्र एवं वैज्ञानिक सुधीर अग्रवाल, कैलिफोर्निया से आए गीता नीकेतन के पूर्व-छात्र अक्षित अग्रवाल के अतिरिक्त हरियाणा के विभिन्न जिलों से विद्याभारती के विभिन्न विद्यालयों के पूर्व-छात्र उपस्थित रहे। सवाई माधोपुर राजस्थान से पूर्व-छात्र हिमांशु गोयल एवं सुधांशु गोयल, असम से हीराक ज्योति भी उपस्थित रहे। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री बनवीर सिंह जी भी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के तृतीय चरण में सभी पूर्व-छात्रों को विद्याभारती हरियाणा की तरफ से स्मृति-चिह्न एंव सम्मान-पत्र भेंट किए गए। गीता विद्यालय के प्राचार्य श्री अनिल कुलश्रेष्ठ ने सभी का परिचय करवाया एंव गीता निकेतन के प्राचार्य श्री नारायण सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया। शांति-मंत्र के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

भाऊराव देवरस छात्र पुरस्कार वितरण समारोह

द्वारा - विद्याभारती सिक्किम

विद्याभारती सिक्किम ने अपने प्रांत में भाऊराव देवरस छात्र पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन प्रेस क्लब ऑफ सिक्किम में दिनांक 25 मार्च 2018 को किया, जिसमें उन्होंने अपने प्रांत के 19 मेधावी छात्रों को भाऊराव देवरस छात्र पुरस्कार से सम्मानित किया। ज्ञातव्य हो कि यह पुरस्कार मेधावी एवं आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को प्रदान किया जाता है। यह समारोह विद्याभारती सिक्किम के प्रांतीय अध्यक्ष श्री छुल्टीम भुटिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें राज्य सरकार के ग्रामीण प्रबंधन एवं विकास विभाग के अधीक्षण अभियंता श्री हरिशंकर शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम में 12 छात्रों को 4000 हजार रुपये प्रति, 04 छात्रों को 5000 हजार रुपये प्रति एवं 01 छात्र को 10,000 रुपये प्रति छात्र के हिसाब से सहयोग राशि के रूप में प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि श्री शर्मा ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि विद्या भारती शिक्षा के क्षेत्र में यह पुण्य कार्य कर रहा है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री भुटिया ने विद्या भारती की स्थापना, उद्देश्य एवं लक्ष्य के बारे में प्रकाश डाला। विद्या भारती सिक्किम के संयोजक श्री मोहन शर्मा ने कहा कि यह पुरस्कार एक महान देशभक्त, सामाजिक चिन्तक एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री भाऊराव देवरस के नाम पर सन् 2005 में प्रारंभ किया गया था। प्रांत के महासचिव श्री विजय शर्मा धिताल ने संबोधन में विद्या भारती के इतिहास, कार्ययोजना, विविध कार्यक्रम, गतिविधि एवं भावी योजनाओं के बारे में प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी कहा कि सिक्किम में विद्याभारती का कार्य सन् 1997 से प्रारंभ हुआ। पूर्व अध्यक्ष श्री पवित्र दाहाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मोहन शर्मा, संयोजक विद्याभारती सिक्किम।

सेवा में

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्री ललित बिहारी गोस्वामी, महामंत्री, विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, म.गाँ. मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065, के लिए हिन्दुस्तान ऑफसेट प्रेस, ए-26, नारायणा इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110028 से मुद्रित एवं विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, म.गाँ. मार्ग नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065 से प्रकाशित। **संपादक :** श्री ललित बिहारी गोस्वामी, फोन : 011-29840013